आपातकाल में सृजन फुलवारी

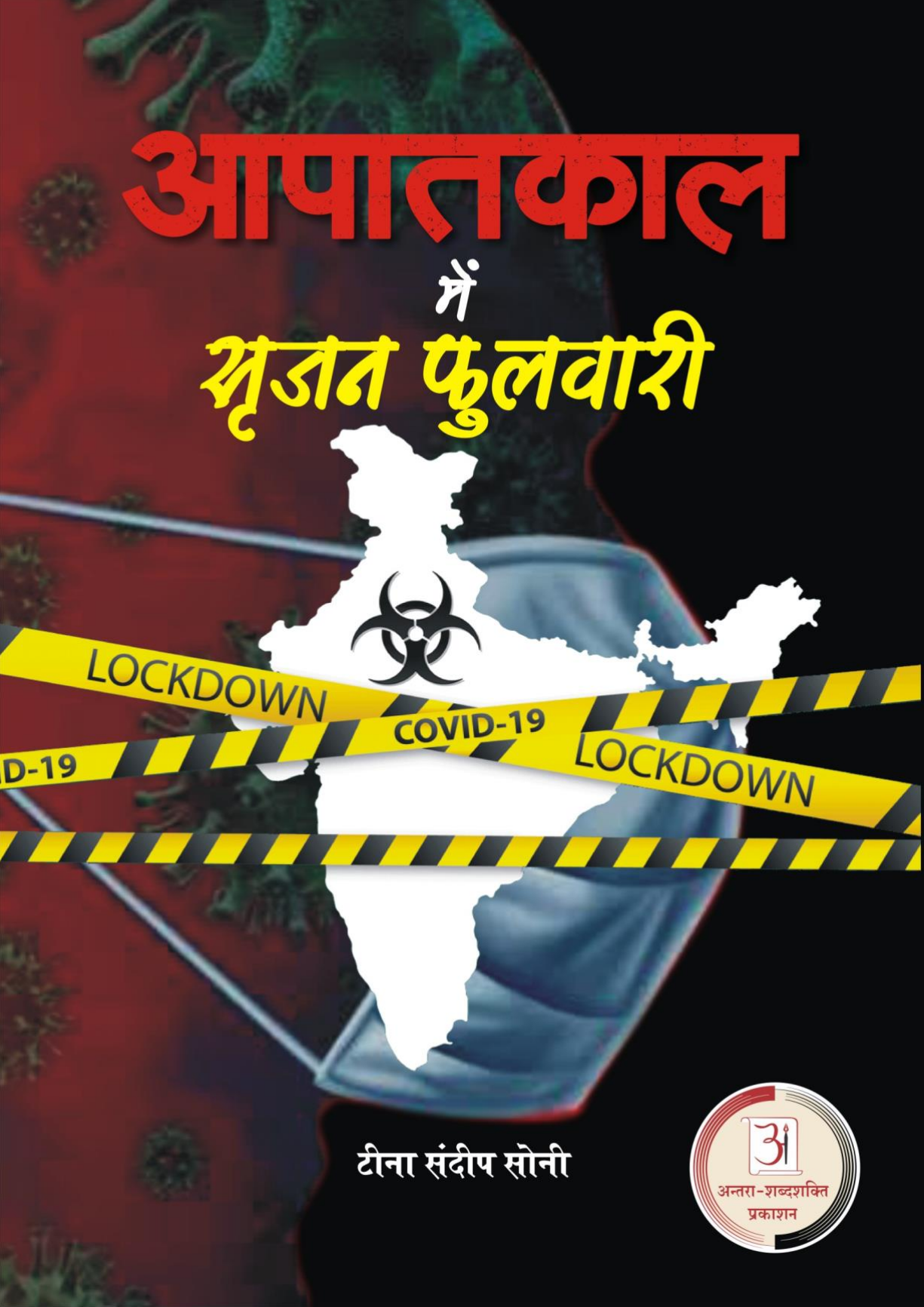

टीना संदीप सोनी

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

टीना संदीप सोनी

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-194-7
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय - 15 नेहरू चैक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण - 2020, टीना संदीप सोनी
मूल्य - 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY TEENA SANDEEP SONI

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	स्वरों की देवी	6
2.	अन्तराशब्दशक्ति	7
3.	बेटी बचाओ	8
4.	अभियान	9
5.	खेल	10
6.	मौन	10
7.	जीवन	11
8.	सपना	12
9.	दोस्ती	13
10.	दुनिया	14
11.	दीप आस का	15
12.	आशा	16
13.	नारी	17
14.	उत्सव	18
15.	पहचान	19
16.	ऋण	20
17.	कोयल	21

स्वरों की देवी

स्वर साम्राज्ञी, स्वरों की देवी,
वीणा वादिनी माँ सरस्वती,
करते वंदन और अभिनंदन
साधो सुर, स्वर, सार हमारे।

हंसवाहिनी, ज्ञानदायिनी,
स्वरों की हमें पहचान दो,
सुरों की रानी, स्वर महारानी,
स्वरों का हमें वरदान दो।
करते वंदन और अभिनंदन
साधो सुर, स्वर, सार हमारे।

संगीत के हैं सात स्वर,
सात रंग प्रकाश के,
फेरे भी होते हैं सात
सात जन्मों का पिया का साथ।
करते वंदन और अभिनंदन
साधो सुर, स्वर, सार हमारे।

इंद्रधनुष के रंग है सात
सप्तऋषि से शोभित आकाश
सात सुरों की होती सरगम
दे आशीष! करुं अभ्यास।
करते वंदन और अभिनंदन
साधो सुर, स्वर, सार हमारे।

अन्तरा शब्दशक्ति

एक स्त्री का स्वप्न
अंतर से अन्तरा जन्मी
सृजन की नई फुलवारी बनी
हुई सम्मानों की वर्षा
उपहारों का ढेर लगा
क्रम अनवरत रहा सदा ही
विश्व रिकार्ड भी पाया है
रौशन हुआ नाम वारासिवनी का
इस नाम ने इतिहास बनाया है
दो हाथों से शुरु हुआ सफर
असंख्य हाथों का साथ हुआ
शक्ति असीमित संचित हो गई
प्रेम की धारा अनवरत बह रही
सृजन शक्ति और नारी शक्ति का
यह संगम अनूठा है
पर दुनिया का परम सत्य है
शक्ति उनकी जीवन साथी है
वही शक्ति एक स्त्री को
एक मुकाम तक पहुँचाती है
स्त्री तभी सृजन करती है
बनकर सृजन शब्द शक्ति से
अन्तरा शब्दशक्ति संस्था व प्रकाशन से
अपने नगर और खुद की
दुनिया में अलग पहचान बनाती है।

बेटी बचाओ

जन्म हुआ बेटी का घर में
छाई खुशियों की बहार
नन्हे-नन्हे कदमों से वो,
पावन करती वो हर कोने को,

आई लक्ष्मी घर हमारे
ऐसा ही सब कहते हैं
दुर्गा रूप में कन्या को
नौ दिनों में पूजा करते हैं।

फिर जाने किसने ये रीत बनाई
जिसने जन्म दिया बेटी को
उसने ही कर दी उसकी विदाई
बेटियाँ क्यों होती है पराई

बेटी तो घर की शान होती
अपने पिता का अभिमान भी होती
बेटी के रुप में माँ भी तो
अपनी परछाईं है पाती

बेटी न हो तो घर सूना,
सूने गालियां और चौबारे,
बेटी नहीं बचाएंगे तो
बहु कहाँ से लाएंगे अपने द्वारे।

अभियान

मन था नीरस
और निरर्थक इस जीवन की धारा
चाह थी दिल की एक हमेशा
करते सेवा मातृभूमि की
देकर अपनी जान
मगर बताए हमें कौन ये
करें कौन सा काम
सोच हमारी सीमित है
और अल्प हमारा ज्ञान
मगर योग से एक व्यक्तित्व से
हुआ हमारा मेल
देखकर उनकी कर्तव्य निष्ठा
और कर्म से प्रेम
कर्मप्रेम ही शक्ति उनकी
लेखन क्षमता अपार
उनसे हमें मिली प्रेरणा
तो शुरु हुआ लेखन अभियान!

खेल

होते हैं
किस्मत के खेल-निराले
कभी दुख
तो कभी सुख के साये
सुख का साथी
जग बन जाए
पर दुख सच्चाई का
आईना दिखाए
दुख आकर
बस होश उड़ाता
तब साथ नहीं देता है कोई,..!

मौन

मौन शब्द की महिमा न्यारी
जिसे जानते सब नर-नारी।

मौन शब्द है, मौन ही भक्ति
मौन में छुपी है अपार शक्ति।

ठान लिया है मन में यह प्रण
कलह से बेहतर है चुप रहना

मौन है मेरा अनमोल गहना,
कोई कुछ बोले मुझे मौन है रहना।

जीवन

शाम हुई, दिन ढल गया
अंधियारे का आगाज़ हुआ
अँधियारा जब घनघोर हुआ
सोया सारा जग शांति से
शोर सारा शांत हुआ
निशाचर जागे,
चोरों का दल मुस्तैद हुआ
तंत्र-मंत्र और जादू टोना
तीव्र हो गया अंधियारे में
गहन अंधियारे को चीरती
भोर की एक पहली किरण
भोर हुआ फैला उजियारा
चहुओर प्रकाश हुआ
चंदा मामा अस्त हो गए
सूरज चाचू का उदय हुआ
यही क्रम इस जीवन का
जो सतत रुप से चलता है।

सपना

सपनों की ये दुनिया न्यारी,
जिसे देखते सब नर-नारी।

कहते भोर का सच होता सपना,
क्या रात का सपना नहीं होता अपना?

सपनों के ये खेल निराले,
खुली आँखों के सपने भी प्यारे।

करना है यदि सपने साकार,
खुद में भर लो श्रम का सार।

श्रम से ही ले सकते हैं
सब सपने सच का आकार।

मैंने देखा अद्भुत सपना,
जिसमें देखी अनुपम दुनिया।

इस दुनिया के ढंग निराले,
इन्द्रधनुष के रंग है सारे।

है रंगों का संसार अनूठा
मुझको रंगों से है प्यार।

मन करता खो जाऊं इसी में
जीवन का है सार इसी में।

पंख लगाकर मैं उड़ जाती
सपनो का संसार सजाती।

दोस्ती

लोगों का आना,
लोगों का जाना इत्तेफ़ाक़ होता है
आपका आना,
आपका मिलना भी संयोग सा है।

आपसे मिलकर,
आपको समझा,
मानो किसी किताब को पढ़ना शुरु किया,

आप में हमने पाई
समुद्र का सार,
आसमां की गहराई,
माँ की ममता
और
एक अच्छे दोस्त की तस्वीर।

अब
ये साथ हमेशा बनाये रखना,
हर कदम में हमें साथ रखना,
हों दूर भी हम
एक दूसरे से तो क्या?
हमें हमेशा याद रखना।

आज
ये दिल से दुआ करते हैं
कि हमेशा आबाद और स्वस्थ रहें आप।

दुनिया

न देखी दुनिया सारी हमने
न देखा सारा संसार।
पर देखे हैं लोग ऐसे
झूठे, फरेबी और गद्दार।

पहन मुखौटा सच्चाई का
ये देते धोखा रोज,
होता है मन उदास
होता सामना जिस रोज।

मगर हमारी चाह यही थी
पाते सच्चा साथ हो
सच्चाई की मूरत जिसमें
रहे सदा वफादार।

धन-दौलत की चाह न होती
न जमीन-जायदाद से प्यार
करते एक दूसरे से सब
राम-भरत सा प्यार।

पाया एक रुप सच्चाई का
आया वफादारी का भाव,
यही तलाश थी इस दिल को
जो पूरी हो गई आज।

उदासी का सामना
अब नहीं करना पड़ता है
आपको देखकर
यही भाव इस मन में आता है।

सच्चाई चहुँ ओर ऐसी ही छवि
हमने आपमें पाई है,
खोज हो गई पूरी दिल की
इस दिल ने तसल्ली पाई है।

दीप आस का

दीप जलाया आस का
भरा तेल विश्वास का
इस अमर ज्योति से आशा करते
जीवन के उत्थान का।

सोच यही थी, चाह यही थी
मगर डर था तूफान का
अगर तूफान आ जाए
तो क्या होगा उत्थान का?

मगर हौसला मिला जुगनू से
जो तूफानों से लड़ता है
तूफानों से लड़कर भी
सदा चमकता रहता है।

पाकर हौसला आया जोश
भरा तेल विश्वास का
फिर गहन अंधियारे को चीरकर
दीप जल गया आस का।

आशा

आशा से आकाश थमा है
आशा पर संसार टिका है

आस न होती साँस न होती
तो दिल की ये प्यास न होती

आशा को विश्वास से रंग दो
सच्चाई की स्याही भर दो

फिर देखो आशा की रौनक
मन चमके जैसे हो कनक

इसी आस से हम भी कहते
आशा से आकाश थमा है।

नारी

नारी शब्द
सुनने और बोलने में
जितना छोटा होता है,

उसका अर्थ
उतना ही व्यापक
और महान होता है,

नारी ही इस धरा पर
नवजीवन को
अवतरित करती है

इसी लिए
नारी को जननी
और जगदम्बा भी कहते हैं

नारी एक अबोध बालिका से
बहन, पत्नी, माँ, दादी और नानी की
भूमिका बखूबी निभाती है

नारी जब पत्नी के बाद
माँ बनती है
तो अपनी पूर्णता को प्राप्त करती है

बुराई पर विजय पाती है
तभी कहलाती है
नारी तू नारायणी।

उत्सव

खुशियों का दिन आया है
पैगाम साथ मे लाया है।
याद दिलाने एक शाम की
याद दिलाने एक नाम की
जिसने मिलन कराया था।
लगी लगन, हुआ मिलन
मिला हाथ से हाथ था
हमराही हुए हमसफ़र
सात जन्मों का साथ हुआ
खुशियाँ दुगनी हुई तब
जब जीवन में
नव जीवन का आगमन हुआ
तभी धरा पर
मातृशक्ति का प्राकट्य हुआ
दी बधाई सब अपनों ने
यादों से दिन उत्सव बना।

पहचान

ए मेरे परवरदिगार
एक नज़र इनायत कर
एक छोटा सा सपना मेरा
इसमें हकीकत का रंग भर

न शोहरत की आरजू मेरी
न दौलत ही पाना मुझे
बस एक छोटा सा सपना
मेरे इस दिल में बसता है।

करुं सज़दा तेरे दर पे
कि याद तू रखे मुझको
न हौसला ही साथ है
मुझमें भरा अज्ञान है।

न शब्दों की पहचान है
न लेखन का वरदान है।
कैसे लिखूँ मैं अर्जियाँ
न मुझको कोई ज्ञान है।

पाना मुझे पहचान अपनी
एक तू ही तो मददगार है
पर सपना मेरा छोटा सा है
करना तुझे ही साकार है।

ऋण

जन्म और मृत्यु के बीच का
समय कहलाता है जीवन।
ये जीवन बहुत अनमोल है
जो जीव सौभाग्य से पाता है।

पृथ्वी, जल, अनल, गगन, पवन
बना पंच तत्वों से यह तन।
केवल जीना न ध्येय रहे
न भूलना चुकाना है यह ऋण।

कर लेना बात यह आत्मसात
जब तक न लो अंतिम सांस
तन के या फिर अपने मन के
मालिक नहीं हैं, हम हैं दास।

कोयल

शरद ऋतु बीती
बसंत ऋतु आई
फिर कोयल ने
कुहुक लगाई।

देखो कोयल
कितनी काली
कितनी मधुर पर
उसकी वाणी।

कोयल यह
संदेश सुनाती
मधुर स्वर में
है सिखलाती।

छोड़ बनावटी
रंग-रुप को
बोलो मीठी
वाणी अनमोल।

है तीर अभेद
तीखी वाणी का,
जब भी बोलो
बोलो मीठे बोल।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

टीना संदीप सोनी

१३, कसारी मोहल्ला, वारासिवनी
जिला- बालाघाट (म.प्र.)

Email- soniteena1616@gmail.com
Mobile - 8889957138

आपातकाल मतलब कोराना वायरस (कोविड१९) जिसने न सिर्फ भारत बल्कि संपूर्ण विश्व में तहलका मचा रखा है। हमारी जिन्दगी का वह काला सच जिसे शायद आने वाला भविष्य सदियों तक याद रखेगा। ऐसे विषम एवं विकट परिस्थिति जिसमें सारा विश्व अपने आपको, अपने नागरिकों को सुरक्षा एवं बचाव के साथ-साथ इसके समाधान में लगा हुआ है। एक ऐसा समय जिसने जिन्दगी के वह सारे सबक सिखाया जिसे जानकर भी हम हमेशा से अनजान बने रहे, या यूँ कहूँ कि उस सच्चाई को जीना सिखाया जिसे हम भूलते जा रहे थे। घर, परिवार, साथ जीना, हँसना-बोलना, खेलना जैसी सारी खुशियाँ जो हमने अपने जीवन की भागदौड़ में भूल गये थे पुनः याद करा दिया।

इस आपात काल ने मुझे भी बहुत कुछ दिया जिसका जीवन भर आभार मानूंगी। उसमें सबसे पहला अनमोल उपहार तो प्रीति दीदी के रूप में मिला जिन्होंने मुझे जिन्दगी के कई छोटे-छोटे सबक के साथ मेरे आत्मविश्वास को बढ़ाया। मैने कभी सोचा भी नहीं था कि मै कुछ लिख भी सकती हूँ किंतु ये उन्हीं का आत्मविश्वास और साथ है जिसके कारण मै अपने दिल की भावनाओं को अक्षरों में ढ़ाल सकी। टूटी-फूटी ही सहीं किंतु अपनी भावनाओं को शब्दों में ढ़ालना मेरे लिऐ बहुत बड़ी उपलब्धि है। और उसपर उन भावनाओं को एक पुस्तक का आकार मिलना तो जैसे मेरे लिए ख्वाब से भी बढ़कर हो गया।

अन्तरा शब्दशक्ति की इस अनोखी पहल जिसमें एक से बढ़कर एक ख्यात विख्यात लेखक एवं रचनाकार के साथ मेरी भावनाओं को स्थान देने के लिए मै सदैव आभारी रहूंगी।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-194-7

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/